Raga of the Month August 2022 Raga Purbya/Purba/ Purva

राग पूरब्या / पूरबा / पूर्वा

राग पूरब्या / पूरबा यह एक अप्रचलित राग है। पंडित भातखंडेजीने क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ६ में इसका विवरण दिया है। प्रचार में संपूर्ण पूर्वा या पूर्वा इन नामोंसे भी यह राग पहचाना जाता है।

प्रचार में कम होने के कारण उसके स्वरूप में अलग-अलग मत पाए जाते हैं। पंडितजीने इस राग को मारवा थाटसे उत्पन्न राग माना है। तथा उसमें पंचम वर्जित है और दोनों धैवत लगते हैं। इसमें पूर्वी, पूरिया और मारवा रागोंका संयोग है। यह राग संध्याकाल में गाया जाता है; और उसका विस्तार मंद्र और मध्य सप्तक में होता है। किताब में दिया हुआ रागस्वरूप संक्षिप्तमें इस प्रकार है।

सा, ऩि रे सा, ऩि रे ग, मं ग , ध मं ध मं ग, ग रे सा, रे ऩि, सा रे सा, ऩि, रे ग मं ध मं ग रे सा;
ध ऩि सा रे ग , रे ग मं ध मं ध ग रे , नि ध मं ग, ग मं ध मं ग, रे सा, ऩि रे सा;

सां, नि रें सां, मं ध सां, ध नि रें गं, गं रें सां, रें नि ध मं ग, मं ध मं ग, ग रे सा, ऩि रे सा

प्रचार में प्रायः दो प्रकार सुनने में आते हैं। उनमें दोनों मध्यम, पंचम और कोमल धैवत रहने वाला एक प्रकार तथा दोनों धैवतों का प्रयोग करने वाला दूसरा प्रकार पाया जाता है। ये प्रकार पूर्वी रागके आधार पर गाये जाते है।

यूट्यूब पर इस रागकी जानकारी पंडिता मंजिरी असनारे केळकरने “आमोदिनी” इस चैनलपर दी है। तथा यूट्यूब पर राग पूर्वा या पूर्बा ढूंढनेसे पंडित जसराज, पंडित जितेंद्र अभिषेकी, पंडित उल्हास कशाळकर , पंडित केदार बोडस और पंडिता शाल्मली जोशी इनका गायन और उस्ताद मुश्ताक़ अली खाँ , उस्ताद विलायत खाँ इनका वादन उपलब्ध है।

आजके ऑडियोमें हम उस्ताद विलायत हुसैन खाँ द्वारा रचित बंदिश - ए सांझ भई - सुनेंगे जो पंडिता अपूर्वा गोखलेजीने गायी है, बाद में पंडित आनंदराव लिमये और पंडित राम मराठेजीके गायन का अंश सुनेंगे।

आभार : पंडिता अंजली मालकर, पंडिता अपूर्वा गोखले, पंडित यशवंतबुवा महाले , “आगरा घराना परंपरा और बंदिशे ”

०१-०८-२०२२

Link to the list of 130+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx